So, Sir, I demand the Government to consider this issue in the interest of the youth of this country who are eligible and missed the opportunity for no fault of them. Thank you very much, Sir.

SHRI M. MOHAMED ABDULLA (Tamil Nadu): Sir, I would like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. JOHN BRITTAS (Kerala): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. V. SIVADASAN (Kerala): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRI SANDOSH KUMAR P (Kerala): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

PROF. MANOJ KUMAR JHA (Bihar): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. FAUZIA KHAN (Maharashtra): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRIMATI JEBI MATHER HISHAM (Kerala): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRI IMRAN PRATAPGARHI (Maharashtra): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

Air pollution in Ramgarh district of Jharkhand

श्री खीरू महतो (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं पहली बार बोलने जा रहा हूं। महोदय, झारखंड प्रदेश के रामगढ़ जिला हजारीबाग क्षेत्र के अंतर्गत कोतरे, बसंतपुर, पचमो - केबीपी प्रोजेक्ट बनाया गया है, जिसमें सीबीए

एक्ट, 1957 के तहत सन् 1981 में 3,070 एकड़ भूमि अर्जित की गई थी। यह भूमि कोल इंडिया लिमिटेड, सी.सी.एल. के लिए की गई है। 43 वर्ष बीत गए हैं, परन्तु सी.सी.एल. ने आज तक कार्य शुरू नहीं किया है, जो 1,140 एकड़ रैयती भूमि है, बाकी 1,931 एकड़ वन विभाग की भूमि है। महोदय, उसके बाद अभी 1,057 एकड़ रिज़र्व फॉरेस्ट की भूमि की भी मांग की गई है, जिसमें पांच गांवों के लोग शामिल हैं, जिसमें बसंतपुर, पचण्डा, हुरदाग, पचमो, रहावन आदि शामिल हैं। अगर 1,931 एकड़ भूमि और ली जायेगी, तो वन्य जीव के रहने के लिए स्थल समाप्त हो जायेगा तथा पर्यावरण संतुलन खत्म हो जाएगा, इसलिए वन को बचाया जाए और वन भूमि को इतनी अधिक मात्रा में नहीं दिया जाए। *

महोदय, झारखंड में बड़े-बड़े कारखाने एवं विद्युत पावर स्टेशन्स हैं, हैं जैसे रामगढ़ जिला में पतरातू, बोकारो थर्मल पावर, भंडारीदाह, बोकारो स्टील सिटी, पूर्वी सिंहभूम जिला में सैकड़ों लौह अयस्क फैक्ट्रियां हैं। कोयले की भी सैकड़ों कोयला खदानें संचालित हैं। अन्य प्रदेशों में भी कोयले की खानें हैं, जैसे - वैस्ट बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, नागपुर, महाराष्ट्र आदि। कोयला खान के चलते कोयला खनन प्रदेशों में बड़े-बड़े डम्पयार्ड्स में आग लगी हुई है, जैसे झारखंड का धनबाद जिला है, रामगढ़ जिला है एवं अन्य स्थान हैं। इसके कारण पूरा वायु प्रदूषण हो रहा है तथा कोयला खान के चलते वन भूमि को भी बचाना मुश्किल हो गया है। वहां अगल-बगल में फैक्ट्रियां हैं। *

उपसभाध्यक्ष (श्री भुबनेश्वर कालिता): आपको सिर्फ लिखा हुआ ही पढ़ना है।

श्री खीरू महतो : महोदय, वन भूमि के अधिग्रहण पर रोक लगाई जाए। जनहित में जितना आवश्यक हो, उतनी ही भूमि का अधिग्रहण किया जाए। *

उपसभाध्यक्ष (श्री भुबनेश्वर कालिता): आपने जो लिखकर दिया है, केवल उसी तक सीमित रहिए।

श्री खीरू महतो : हम सरकार से मांग करते हैं कि वन भूमि के अधिग्रहण पर रोक लगाई जाए और वन भूमि का अधिग्रहण नहीं किया जाए, धन्यवाद।

SHRI M. MOHAMED ABDULLA (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. FAUZIA KHAN (Maharashtra): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. V. SIVADASAN (Kerala): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

---

* Not recorded.

SHRI SANDOSH KUMAR P (Kerala): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. JOHN BRITTAS (Kerala): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRIMATI JEBI MATHER HISHAM (Kerala): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

Need to start Oral History Project in the Universities in the country

श्री राकेश सिन्हा (नाम निर्देशित) : उपसभाध्यक्ष महोदय, भारत एक प्राचीन सभ्यता है और इसकी संस्कृति में प्रयोगधर्मिता एवं विविधता अवर्णनीय है। देश में सूक्ष्म संस्कृतियों के रूप में स्थानीयता आधारित अनेक परम्पराएं, जीवनमूल्य हजारों वर्षों से उपस्थित हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में कला, नृत्य, चित्रकला सहित बहुतायत स्वरूप में सांस्कृतिक चेतना पाई जाती है। चाहे ग्रामीण क्षेत्र हो या जनजातियों का क्षेत्र हो, अनेक प्रकार की सूक्ष्म संस्कृतियों का आधार आध्यात्मिक और पीढ़ी दर पीढ़ी अर्जित अनुभव है। साथ ही देश में ज्ञान का उपार्जन निरन्तर होता रहा है। यहां तक कि आक्रमण काल और औपनिवेशिक काल में भी ज्ञान उपार्जन, रचनात्मक लेखन का दौर नहीं रुका। जब हम पर्यटन के लिए किसी क्षेत्र में जाते हैं, तब वहां की सूक्ष्म संस्कृतियों, वहां की ज्ञान की परम्पराओं की जानकारी मिलती है।

एक प्राचीन सभ्यता जिसका इतिहास दस हजार वर्षों का है, उसकी धरोहरों, ज्ञान की परम्पराओं, सूक्ष्म संस्कृतियों को लेखन में नहीं समेटा जा सका है। वैज्ञानिक तरीके से एकत्रित करना, जानकारियों का इन्साइक्लोपीडिया बनाना हमारा दायित्व है। यह कार्य आजादी के बाद से उपेक्षित रहा है। नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा पर बल दिया गया है। देश में अपनी धरोहरों के प्रति उत्सुकता बढ़ी है।

अतः ओरल हिस्ट्री प्रोजेक्ट आरम्भ करने की आवश्यकता है। इसके तहत श्रुतियों में और अलिखित रूप से उपस्थित जानकारियों को एकत्रित किया जाए। आज यूरोप के अधिकांश देशों के विश्वविद्यालयों में यह प्रोजेक्ट प्रमुखता से चल रहा है। भारतीय संदर्भ में इसकी आवश्यकता और भी अधिक है। अतः मेरा अनुरोध है कि भारत के विश्वविद्यालयों में इस प्रोजेक्ट को आरम्भ किया जाये, धन्यवाद।